GNITED MINDS
Journals

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VIII, Issue No. XV, July-2014, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

नैतिक शिक्षा दर्शन एवं पर्यावरण शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन धनबाद जिला के उच्च विद्यालय के संदर्भ में

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VIII, Issue No. XV, July-2014, ISSN 2230-7540

नैतिक शिक्षा दर्शन एवं पर्यावरण शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन धनबाद जिला के उच्च विद्यालय के संदर्भ में

Uday Kumar Sharma

Asst. Professor in Education, MA. Sc., M.Ed., M.Phil. (Education), Under Vinoba Bhave University, Tathagat Teacher Training College, Dhanbad Jorapipal

---------------------------------x---------------------------------

भारत में पर्यावरण के सम्बन्ध में प्राचीन काल से अनवरत सनातन रूप से एक सुदृढ़ विचार-आचार की परम्परा रही है जो आज भी कायम है। परन्तु जीवन एश्वर्य होने के कारण नैतिकता पर्यावरण के प्रति आधुनिक जीवन में वर्तमान जीवन में सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रासंगिक बन गई है। वस्तुतः भारत में पर्यावरण क्या है? इस प्रश्न का उत्तर इस तथ्य में निहित है कि हम पर्यावरण का संरक्षण कैसे कर सकते है। हमारे यहां वैदिक काल से दैनिक आचरण धार्मिक रीति-रिवाज, धार्मिक अनुष्ठान, जीवन यापन की शैली आदि सब में पर्यावरणीय सौन्दर्य के संरक्षण-संवर्धन का अर्थ निहित है। सृष्टि के मूल में पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि तथा आकाश की विद्यमानता भारतीय विचार परम्परा की सामान्य विशेषता है और यह आज के विज्ञान का स्थापित तथ्य भी है। यहाँ सृष्टि का अर्थ व्यापक रूप में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड से लिया जाता है। ब्रह्माण्ड या सृष्टि के अन्तर्गत प्रकृति-पुरूष पशु, कीट-पतंग, नवस्पतियों, भौतिक तत्व आदि सभी हैं यहां तक की अनन्तर तत्वों का समान अस्तित्व है। आशय है कि जो कुछ भी इस सृष्टि में हैं, सृष्टि के अन्दर ही है। सभी एक दूसरे के पुरक बनकर विश्व या ब्रह्माण्ड या पर्यावरण की महिमा का अंग बन जाते हैं, अतः विश्व ने जो कुछ भी सृष्ट है, वह सृष्टि का पर्यावरण हैं, अतः कहा जा सकता है पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि तथा आकाश के मूल में तथा विभिन्न आपसी सम्मिकणों के प्रतिफल में, आपसी सामंजस्य में परस्पर क्रिया-प्रतिक्रिया में जो कुछ भी दृश्य-अदृश्य रूप में, स्थूल-सूक्ष्म रूप में प्रस्तुत है या जो कुछ भी उससे निकलने की सम्भावना है इन्हें पर्यावरण के अधीन ही रखा जाएगा। अतः पर्यावरण की सुरक्षा धर्म से ही बड़ा धर्म विश्व-धर्म है। अब आगे भारतीय नेतिक दर्शनों में निहित पर्यावरण संरक्षण-संवर्धन भावों इस निमित्त उनमें विद्यमान संकेतों संदेश की चर्चा की गई ळें

प्रायः सभी नैतिक शिक्षा दर्शनों में किसी न किसी रूप में पर्यावरण विचार व उसके महत्व का निश्यित रूप से प्रत्यक्ष या परोक्षतः चिन्तन दृष्टिगत है। भारतीय नैतिक शिक्षा दर्शन की बुनियादी मन्यताओं में ही पर्यावरण व पर्यावरण-संरक्षण - सम्बर्धन संबंधी विचार विद्यमान है।

पर्यावरण वह सब कुछ है जो प्राणी को चारों ओर से घेरे हुए है। और उसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रहा है। यह उन सभी बाहरी दशाओं और प्रभावों का योग है जो प्राणी के जीवन के विकास पर प्रीााव डालते है। वास्तव में देखा जाए जे पर्यावरण वह जटिल एवं सरल सम्पूर्णतय है जो प्राणी के अस्तित्व का हम करने से पूर्व एंव अस्तित्व समाप्त होने के पश्चात उन्हें जटिल प्रकृतिक तंत्र सरल रूप में उपलब्ध कराती है। प्राणी को विविध रूपों में प्रभावित कर जीवन के अस्तित्व के निमित्त गतिशील होने पर विवश करती है। विभिन्न विचारकों विभिन्न जनसमूहों द्वारा पर्यावरण का अर्थ विविध दृष्टिकोणों से विविध रूपों में किया जाता है। जिसका सार-सारांश भारतीय विचारक सविन्द्र सिंह वं ऐ. दुबे ने कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया है, पर्यावरण एक अविभाज्य समष्टि है। तथा भौतिक, जैविक एवं सांस्कृतिक तत्वों वाले पारस्परिक क्रियाशील तत्वों से इनकी रचना होती है। ये तंत्र अलग-अलग तथा सामूहिक रूप से विभिन्न रूपों में परस्पर सम्ब(होते है। भौतिक तत्व ;स्थान, स्थल रूप, जलीय भाग, जलवायु मृदा खनिज आदिद्ध मानव निवास क्षेत्र की परिवर्तनशील विशेषताओं, उसके सुअवसरों तथा प्रतिबन्धक अवस्थितियां को निश्चित करते है। जैविक तत्वां ;पौधे, जन्तु, सुक्ष्म जीव मानव आदिद्ध जीव मंडल की रचना करते है। सांस्कृतिक तत्व ;आर्थिक, सामाजिक राजनैतिकद्ध मुख्य रूप से मानव निर्मित होते है। क्या सांस्कृतिक पर्यावरण की रचना करते है इस अभिव्यक्ति में पर्यावरण के प्राकृतिक सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक आदि पहलुओं को सम्मिलित करने का भरपुर प्रयास किया गया है।

भारतीय नैतिक शिक्षा दर्शन अध्ययन लक्ष्य की तरह है। शिक्षा दर्शन का लक्ष्य विश्व सम्पूर्णता में अध्ययन करने का है और भारतीय दृष्टि सम्पूर्णता में व्यवहारिकता की दृष्टि है। भारतीय संस्कृति में विचार व आचरण में अदभुत सामंजस्य दृष्टिम होता है और इसी आलोक में सम्पूर्ण सृष्टि को पर्यावरण के अधीन रखा गया है। और उसके साथ सामंजस्य सम्पूर्ण व समादरणीय व्यवहार संपादन की अपेक्षा भी सन्निहित है।

<u>पर्यावरण शिक्षा में विकास -</u>

पर्यावरण शिक्षा में नैतिक कि दायित्व को जानने एवं विचारों को स्पष्ट करने की वह प्रक्रिया है। जिसमें मनुष्य अपनी संस्कृति तथा जैव-भौतिक परिवेश के मध्य अपने आप की सम्ब(ता को पहचानने एवं समझने के लिए आवश्यक कौशल और अभिकृति का विकास कर सके। पर्यावरण शिक्षा में नैतिकता पर्यावरण की गुणवत्ता से संबंधित प्रकटणां हेतु व्यवहारिक संहिता निर्माण करने एवं निर्णय लेने की आदत को भी व्यवस्थित करती है। जिसमें समुदाय को यह अर दायित्व देने का प्रयत्न किया गया है कि वह समास्याओं को समझ कर उनका समस्याओं की पुनरावृत्ति नहीं हो ।

पर्यावरण शिक्षा में नैतिक वस्तुतः विश्व समुदाय की पर्यावरण संबंधी ही जाने वाली वह शिक्षा है। जिससे वे समस्याओं से अवगत होकर उसका हल खोज सके तथा साथ ही भविष्य में आ सकने वाली समस्याओं को रोक सकें। पर्यावरण शिक्षा में नैतिक का विकास करने का प्रमुख प्रयोजन नागरिक के अपने उत्तरदायित्वों में पर्यावरण की सुरक्षा एवं प्रबन्ध के बारे में जागृति पैदा करना और उसे बढ़ाना है। इसी प्रकार पर्यावरण को

समझने, हल निकालने तथा निदान या दूर करने की शिक्षा है एवं वह सभी कार्य निष्पादन इस तरह किया जाना है कि उसकी पुनरावृति न हो।

पर्यावरण शिक्षा में नैतिक शिक्षा की समस्या –

पर्यावरण शिक्षा की सबसे बड़ी समस्या है कि बच्चों तथा बुजुर्गों के बीच में विचारों की बहुत बहुत बड़ी खाई है। विचारों की इस खाई को पढ़ना पर्यावरण शिक्षा हेतु एक प्रमुख समस्या बनी हुई है।

पर्यावरण शिक्षा में नैतिकता पर्यावरण के प्रति भूल कर मनुष्य अपना निजी स्वार्थ में रहता है। ज्यादातर लोग ये समझते है कि वे पर्यावरण के प्रति क्या अन्याय कर रहें है। पर अपने स्वार्थ तथा धन के लालच में वे अपने कार्यकलापों जैसे भौतिक तथा जैविक वस्तुओं का दोहन ठीक नहीं करते है। स्टाकहोम संगोष्ठी को हुए आज सत्रह वर्ष से भी ज्यादा हो गए है। पर पर्यावरण सुधार के बजाए नई समस्याओं का जन्म हुआ है। जब तक मानव स्वार्थ तथा धन के लालच को बाहर नहीं आएगा या नैतिक पर्यावरण के प्रति नहीं आएगा तबतक पर्यावरण की समस्याएं हल नहीं होंगी। बल्कि और भी गंभीर होती जाएंगी। पर्यावरण नियमों तथा कानूनों को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दृढ़ता के साथ लागू करना होगा।

समस्या कथन –

पर्यावरण में नैतिक शिक्षा की कमी के कारण विश्व में भविष्य के लिए संकट मंडरा रहा है। यदि देखा जाए तो पर्यावरण का प्रदूषण जनसंख्या वृ(ि, स्त्रोतों का अनियमित दोहन, भूमि प्रदूषण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, रेडियोएक्टिव प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण इन सभी प्रदूषण से पर्यावरण का खराब करने का कारण है। पर्यावरण के प्रति नैतिकता को खो देना भविष्य कि चिंता नहीं करना भविष्य में आने वाले पिढ़ी को भुल जाना।

जिसके कारण ‘‘नैतिक शिक्षा दर्शन एवं पर्यावरण शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध का उद्देश्य –

नैतिक शिक्षा दर्शन एवं पर्यावरण शिक्षा का अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है। इस परिपेक्ष्य में ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता योग्यता का अध्ययन करने हेतु समस्या से निम्नलिखित महत्वपूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति अपेक्षित है जो समस्या समाधान हेतु शोध कार्य को एक निश्चित दिशा प्रदान करते है।

उच्च विद्यालय में छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण संरक्षण, पेड़-पौधों एवं जीवन-जन्तुओं का महत्व एवं उपयोगिता के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता योग्यता का अध्ययन करना। उच्च विद्यालयों के शैक्षणिक कार्यक्रम में पर्यावरणीय अध्ययन में नैतिकता का पतन होने के कारण का अध्ययन की वर्तमान स्थिति का आंकलन करना।
- कला एवं विज्ञान विषय समूह के विद्यार्थीयों की पर्यावरण जागरूकता योग्यता का अध्ययन करना।
- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में उच्च विद्यालय में पर्यावरण के प्रति नैतिकता खोजने को दूर करने के प्रति जागरूकता लाने वाले लोगों को प्रोत्साहन हेतु वास्तविक और सही जानकारी उपलब्ध कराना। तथा
- छब्म्त् एवं SERT के उच्च विद्यालय स्तर के पाठ्यक्रम को उन्नयन कर पर्यावरण शिक्षा नैतिक शिक्षा दर्शन के आधारित रूप रेखा तैयार करना।

उपलब्ध साहित्य का अध्ययन

दर्शन ; 1996) ने विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता योग्य बनाने के लिए के ब्ठैम् के पाठ्यक्रम में पुस्तक में पर्यावरण घटक पर एक अध्ययन किया उन्होंने अपने अध्ययन मं यह पाया कि छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता योग्यता में सार्थक अंतन नहीं पाया जाएगा।

भट्टाचार्या ;1997) ने उच्चतर विद्यालय के विज्ञान एवं कला संकाय के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता योग्यता का अध्ययन किया उन्होंने विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में कला संकाय के विद्यार्थियों की तुलना में पर्यावरण जागरूकता योग्यता अधिक पाई गई।

शहनवाज ;1990) ने उच्चतर विद्यालय के शिक्षा को एवं विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता योग्यता पर लिंग भेद का अधिक प्रभाव पाया।

सबलोक राउ ;1995) ने उच्चतर विद्यालय के शिक्षाकों एवं विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता योग्यता और अभिवृति का अध्ययन किया। उन्होंने यह पाया कि शासकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की लिंग भेद का प्रभाव पर्यावरण जागरूकता योगयता पर पाया।

पटेल एवं पटेल ;1995) ने उच्चतर विद्यालय के शिक्षकों में पर्यावरण जागरूकता योग्यता का अध्ययन किया। निष्कर्ष में शिक्षकों में लिंग भेद का प्रभाव पर्यावरण जागरूकता योगयता पर पाया।

राउळत एवं अग्रवाल ;2006) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय अभिव्यक्ति पर अध्ययन किया और यह निष्कर्ष पाया कि –

1. विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में कला संकाय के विद्यार्थियों की तुलना में पर्यावरण जागयक्ता योग्यता और पर्यावरण अभिवृति अधिक पाई गई।
2. ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में शहरी क्षेत्रों की विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता, योग्यता और पर्यावरण अभिवृति अधिक पाई गई।
3. छात्र एवं छात्राओं के मध्य पर्यावरण जागरूकता योग्यता में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

अध्ययन परिकल्पनाएं –

शोध से संबंधित निम्नलिखित परिकल्पनाओं पर कार्य किया गया।

1. उच्च विद्यालयों के विद्यार्थियों ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के लोगों में पर्यावरण के प्रति नैतिकता में जागरूक में लगभग अन्तर नहीं पाया जाएगा।
2. छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति नैतिकता में जागरूकता योग्यता में अन्तर नहीं पाया जाएगा।

अध्ययन की परिसीमा –

प्रस्तुत अध्ययन हेतु झारखण्ड राज्य के धनबाद जिले कोयला क्षेत्र के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों के अध्ययन विद्यालय के विद्यार्थियों को चयन किया गया है। तथा विद्यालयों की संख्या 10 लिया गया है। ग्रामीण विद्यार्थी 50, शहरी

विद्यार्थी 50 लिया गया है। अर्थात कुल छात्रों की संख 100 लिया गया है। यह धनबाद क्षेत्र कोयला के खदानों से भरा हुआ है तथा थोड़ा सा पठारीय भाग जिसमें कृषि की जाती है। लेकिन धनबाद क्षेत्र भारत में कोयला का खदान का क्षेत्र के रूपों में जाना जाता है। यहां की पर्यावरण कोयले की खदानों से प्रभावित होता है। यहां की धरती में कुछ क्षेत्रों में आग लगा हुआ है। जो आजतक जल रहा है। इसका कोई आजतक उपाय नहीं किया गया है। जो नैतिकता पर्यावरण के प्रति नहीं होने के का खदान का दोहन हो रहा है। इस लिये इस क्षेत्र का परिसीमन किया गया है।

शोध प्रबंध लेखन के क्रम में वास्तुनिष्ठ बने रहने की मेरी कोशिश सदैव रही है। लकिन शोध कार्य की चरित्र एवं प्रमाण की आवश्यकता को ध्यान में रखकर प्रवाह-भंजन क्षम्य होगा। पाण्डुलिपि, टंकन और वर्तनी शोधन की त्रिकोणात्मक प्रक्रिया में सावधानी बरतने के बावजूद वर्तनी की एकरूपता एवं शु(ता में यदि गलतियाँ रह गई है तो उन्हें मूल पात्र समझ कर नजरअंदाज की अपेक्षा है। अपनी इन्हीं सीमाओं एवं कर्मो के साथ बिना पूर्णता का दावा किए हुए शोध प्रबंध आप के समक्ष।

समस्या का कथन :- समस्या का कथन निमनलिखित रूप से किया गया है। ‘‘नैतिक शिक्षा दर्शन एवं पर्यावरण शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन – धनबाद जिला उच्च विद्यालय के सन्दर्भ में।

अध्ययन की विधि एवं प्रक्रम –

प्रदत्त एकत्रित करने के लिए विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया छात्रों तथा छात्राओं की नैतिक शिक्षा पर्यावरण शिक्षा के प्रति नैतिकता से संबंधित बहुमूल्य ज्ञान का सीधा साधन एवं स्रोत विवरणात्मक सर्वेक्षण है अतः विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि द्वारा शोध अध्ययन के लिए प्रदत्त एकत्रित किए गये –

चर :

शोध अध्ययन में निम्नलिखित स्वतंत्रता एवं अर्जित चर लिये गये।

1. स्वतंत्र चर मूल निवासी – शहरी तथा ग्रामीण पृष्ठभूमि।
2. लिंग – छात्र एवं छात्रा
3. आश्रित चर – पर्यावरण शिक्षा के प्रति नैतिकता

न्यादर्श :

किसी भी शोधकर्ता के लि सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन करना कठिन होता है। न्यादश प्रविधि शोध कार्य को व्यावहारिक तथा समय धनशक्ति की दृष्टि से मितव्यायी बना देती हैं एक शुद्ध रूप से प्रतिनिधित्व करने वाला न्यादश शोध के सामान्यीकरण के बारे में अधिक से अधिक सूचनाएं प्रस्तुत करता है। अतः पूर्ण जनसंख्या में प्रतिनिधित्व न्यादर्श चुना जाता है।

शोधकर्ता ने धनबाद जिले के विद्यालयों में से

तालिका नं0 3

क्षेत्र के आधार पर छात्र के न्यादर्श का विवरण

क्रम संख्या	ग्रामीण छात्र	शहरी छात्र	योग
1	50	50	100

तालिका नं0 3 दर्शाती है कि उच्च विद्यालय के छात्रों के अन्तर्गत दोनों क्षेत्र के विद्यालयों पाये गये है। अध्ययन के लिए उच्च विद्यालय स्तर पर पढ़ रहे 50 शहरी 50 ग्रामीण लिए गए है।

तालिका नं0 4

लिंग के आधार पर छात्राओं न्यादर्श विवरण

क्रम संख्या	छात्र	छात्रा	योग
1	50	50	100

तालिका नं0 4 दर्शाती है कि उच्च विद्यालय स्तर पर छात्रों के अन्तर्गत दोनों लिंग पाये गये है। शोध अध्ययन के लिए उच्च विद्यालय स्तर पर पढ़ रहे 50 छात्र तथा 50 छात्रा लिए गए है।

तालिका नं0 5

मूल निवासी के आधार पर अध्यापकों के लिए न्यादर्श का विवरण

क्रम संख्या	मूल निवासी	छात्र	छात्र	योग
1	ग्रामीण	25	25	50
2	शहरी	25	50	

उपकरण :-

प्रस्तुत शोधकर्ता ये प्रदत्त एकत्रित करने के लिए शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित पर्यावरण शिक्षा के प्रति नैतिकता मापनी का प्रयोग किया गया।

नैतिकता मापनी एक प्रकार का जाँच पत्र है जो किसी कार्य व्यवहार के संबंध में एक या अनेक व्यक्तियों की नैतिकता पर्यावरण के प्रति धारणा की मात्रा ज्ञात करने के लिए प्रयुक्त होता है। इसमें किसी कार्य व्यवहार या पर्यावरण के संबंध में नैतिकता के कथनों का समूह रहता है। जिनमें प्रमापक व्यक्तियों का अभिमत जाना जाता है।

‘‘किसी वस्तु व्यक्ति या नैतिकता के विषय में व्यक्ति के अच्छे भाव,विचार या धारणा को नैतिकता कहते है।’’

नैतिक शिक्षा दर्शन एवं पर्यावरण शिक्षा मापनी का निर्माण

इस उपकरण का उद्देश्य उच्च स्तर के छात्राओं जो ग्रामीण तथा शहरी छात्राओं की पर्यावरण के बढ़ते हुए प्रदूषण से सम्बन्धित नैतिकता का पतन होने का कारण के जानकारी प्राप्त करना था। मुख्य पक्ष जिनका चुनाव किया गया वे प्रदूषण वृ(के कारण प्रदूषण वृ(के दूरगामी परिणाम तथा प्रदूषण को रोकने के उपायों से संबंधित है।

एकांशों का चुनाव –

शोधकर्ता ने अनेक विचारकों द्वारा कही गई पुस्तकों समाचार पत्रों, शोध ग्रन्थों और भाषाओं द्वारा पर्यावरण शिक्षा समस्याओं से संबंधित 50 एकांशों का चुनाव किया गया। मापनी को पहले कुछ ग्रामीण तथा शहरी छात्र छात्राओं में प्रकाशित किया गया और कुछ एकांशों का जिनमें निम्नलिखित कमियां भी निकाल दिया गया।

1) वे एकांश जो त्रुटिपूर्ण अनुपयोगी तथा दोहरे थे।

2) वे एकांश जो अपूर्ण या दिअर्थक थे।

3) ऐसे शब्दों वाले एकांश जो अनुकर्ता को भ्रम में डालते थे।

इस प्रकार शोधकर्ता ने 50 एकांशों का चुनाव किया सकारात्मक व नकारात्मक प्रकार के मिश्रित प्रश्नों को लिया गया। अनुक्रियाओं का अंकलन करने के लिए शोधकर्ता ने पांच मापों वाली मापनी का प्रयोग किया जो इस प्रकार है।

अभिवृत्ति मापनी –

पूर्णतया सहमत सहमत अनिश्चित, असम्भव, पूर्णतया असहमत

मापनी की वैधता तथा विश्वसनीयता –

मापनी की विश्वसनीयता को बनाने के लिए परीक्षण पुनः परीक्षण विधि का प्रयोग किया गया। एक महीने के अंतराल के अंदर परीक्षण तथा पुनपरीक्षण किया गया। प्राप्त अंकों का सांख्यिकीय विश्लेषण के द्वारा सह संबंध निकाला गया। 83 सह सम्बन्ध निकला जिससे प्रमाणित होता है कि हमारी मापनी में विश्वसनीयता है।

वैधता –

15 विशेषज्ञों की राय के अनुसार सभी पक्ष मापनी में शमिल किए गए। इस लिए अन्य विधि का प्रयोग वैधता स्थापित करने के लिए किया गया।

सांख्यिकीय विधि –

प्रदत्तों का विश्लेषण के लिए टी मान का प्रयोग किया गया है।

प्रश्नावली निर्माण –

प्रश्नावली एक महत्वपूर्ण उपकरण है। जिसके द्वारा इस एक समूह की विचारधारा को विभिन्न रूपों से जान सकते हैं।

इस प्रकार कह सकते है कि प्रश्नावली एक विशेष प्रकार की अनुभूति है जिसके द्वारा अध्ययन से संबंधित प्राथमिक तथ्यों की जानकारीऐसे उत्तरदाताओं के निर्देशन से प्राप्त की जाती है जो बिखरे हुए है।

नैतिकता मापनी संबंधी प्रश्नावली का प्रयोग उत्तरदाताओं को राय अथवा अभिवृत्ति से संबंधित सूचना प्राप्त करने के लिए किया जाता है। प्रश्नावली के निर्माण के लिए इस क्षेत्र के 25 कुशल व्यक्तियों से परामर्श किया गया और उसके आधार पर 85 एकांश निर्मित किए गए।

एकांशों का विश्लेषण –

ऐसे एकांश जो बहुत सरल थे या बहुत कठिन थे उन्हें अंतिम सूची में शामिल नहीं किया गया। इस प्रकार जो एकांश विषय से हटकर थे। उन्हें भी अंतिम सूची में शमिल नहीं किया गया। और इस प्रकार अंतिम सूची में 50 एकांशों का चुनाव किया गया।

प्रश्नावली की वैधता तथा विश्सनीयता –

प्रश्नावली की विश्वासनीयता को बनाने के लिए परीक्षण तथा पुनः परीक्षण किया गया। प्राप्त अंकों का सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा यह सह संबंध निकाला गया। सह संबंध 7.5 निकला जिससे प्रमाणित होता है। कि हमारी प्रश्नावली में विश्वसनीयता है।

वैधता –

प्रश्नावली की वैधता से तात्पर्य है कि इसके द्वारा जो स्तर उपलब्ध हुए है वे सब संबंधित अध्ययन समस्या के समूचित उत्तर हो इस प्रकार वैधता का प्रत्यक्ष संबंध प्रश्नों की रचना से है। वैधता की जांच प्रश्नों की रचना के तर्क संगत आधार पर भी की जा सकती है।

विशेषज्ञों की राय के अनुसार सभी पक्ष सूची में शामिल किए गए है। इसलिए किसी अन्य विधि प्रयोग वैधता स्थापित करने के लिए नहीं किया गया।

सांख्यिकीय विधि –

प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए टी मान का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या –

नैतिक शिक्षा दर्शन एवं पर्यावरण शिक्षा में उच्च विद्यालय के छोंत्रो द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं का आंकलन किया गया और फिर उसका सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया।

1. धनबाद जिले का उच्च विद्यालय स्तर की ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के छात्र की नैतिक शिक्षा दर्शन एवं पर्यावरण शिक्षा का तुलना।

2. धनबाद जिले के उच्च विद्यालय स्तर की ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के छात्रा की नैतिक शिक्षा दर्शन एवं पर्यावरण शिक्षा का तुलना।

3. धनबाद जिले के उच्च विद्यालय स्तर के शहरी क्षेत्रों के छात्रा एवं छात्रा की नैतिक शिक्षा दर्शन एवं पर्यावरण के प्रति तुलना।

4. धनबाद जिले के उच्च विद्यालय स्तर के ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रा एवं छात्रा की नैतिक शिक्षा दर्शन एवं पर्यावरण के प्रति तुलना।

इस प्रकार टी 10 टी का मान निकाले गये प्रदत्तो का विश्ले ण प्रतेक समूह की अलग तालिका बनाकर किया गया। प्रत्येक समूह के पहले अभिवृति से संबंधित माध्य प्रमाप विचलन निकले गया।उसके पयचात उन पर टी टैस्ट लगाकर टी मान निकाला गया। तालिका न 1 से 4 तक उपयुक्त समूहो की नैतिक शिक्षा दर्शन एवं पर्यावरण के प्रति तुलना को दर्शाती है।

शोध विधि एवं प्रक्रिया –

प्रस्तावित शोध अध्ययन एक सर्वेक्षणात्मक शोध कार्य ह। इसके सर्वेक्षण ;वर्णात्मक अनुसंधानद्ध का प्रयोग किया गया है। तथ्यों के स्पष्टीकरण हेतु पुस्तकों, पत्रिकाओं, शोध पत्रों आदि का प्रयोग किया गया है। इससे प्राप्त समेको आँकड़ों का व्यवस्थापन, सारजीयन कर व्याख्या विश्लेषण हेतु भिन्न सांख्यिकीय विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है। इससे प्राप्त समेको आँकड़ों का व्यवस्थापन, सारजीयन का व्याख्या विश्लेषण हेतु निम्न

सांख्यिकीय विश्लेषण विधि का प्रयोग किया जा रहा है। अध्ययन, प्रमाणिक, विचलन व टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु धनबाद जिले के 50 शहरी एवं 50 ग्रामीण शासकीय उच्च विद्यालयों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया ह। प्रत्येक विद्यालय से हाई स्कूल ;कक्षा 10द्ध के 100 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया हैं

शोध में प्रस्तुत उपकरण – प्रस्तुत शोध में शोध कर्ता द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। प्रश्नावली के विद्यार्थियों हेतु 30 प्रश्न चयनित किये गये।

विश्लेषण – प्रस्तुत शोध में प्रदत्त विश्लेषण सांख्यिकी विधियों द्वारा इस प्रकार किया गया है।

परिकल्पण क्रमांक – 1 –

परिकल्पण क्रमांक 1 का कथन है कि उच्चय विद्यालय के शहरी विद्यार्थियों की नैतिकत शिक्षा दर्शन एवं पर्यावरण शिक्षा के प्रति समझ एवं जानकारी में सार्थक अंतर नहीं होता है।

इसी कथन के अधार पर इसका सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है।

तालिका क्रमांक –1

हाई स्कूल स्तर पर धनबाद जिले के शहरी विद्यार्थियों में नैतिक शिक्षा दर्शन एवं पर्यावरण शिक्षा के प्रति तुलना।

तुलनात्मक मापनी क्षेत्र	संख्या शहरी छात्र	मध्यमान M	प्राथमिक विचलन S.D.	प्राथमिक त्रुटि Ed.	क्रांतिक अनुपात C.R	विश्वास स्तर	तालिका से C.R. का मान
नैतिक शिक्षा दर्शन	50	26.32	2.60	04.5	13.45	0.05	1.97
पर्यावरण शिक्षा	50	2.26	3.70			0.01	2.60

विश्लेषण एवं व्याख्या –

गणना द्वारा प्राप्त ब्न्त्ण का मान 13–14 है।

जो 0.05 एवं 0.01 विश्वास स्तर के सारणीयन मात्र क्रमशः 1.97, 2.60 है जो दोनों सार्थकता स्तर के मान से अधिक हैं अर्थात् हाई स्कूल स्तर पर शहरी विधि शिक्षा में नैतिक शिक्षा एवं पर्यावरण समझ एवं जानकारी में सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना क्रमांक – 2 –

हाई स्कूल स्तर पर धनबाद जिले के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों को नैतिक शिक्षा दर्शन एवं पर्यावरण शिक्षा के समझ एवं जानकारी में सार्थक अंतर नहीं होता है।

तालिका क्रमांक – 2

तुलनात्मक मापनी क्षेत्र	विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान M	प्राथमिक विचलन S.D.	प्राथमिक त्रुटि S.Ed.	क्रांतिक अनुपात C.R	विश्वास स्तर	तालिका से C.R का मान
नैतिक शिक्षा दर्शन	शहरी छात्र	50	25.28	2.92	0.64	9.44	0.05	1.98
पर्यावरण शिक्षा	ग्रामीण छात्र	50	19.78	3.42			0.01	2.63

विश्लेषण एवं व्याख्या – गणना द्वारा प्राप्त ब्न्त्ण का मान 9.44 है। जो 0.05 एवं 0.01 विश्वास स्तर के सारजीयन मान क्रमशः 1.98 एवं 12. 63 है। जो दोनों सार्थकता स्तर के मान से अधिक है। अर्थात् हाई स्कूल स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण छात्रों में नैतिक शिक्षा दर्शन एवं पर्यावरण शिक्षा के प्रति समझ एवं जानकारी में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना क्रमांक – 3 –

हाई स्कूल स्तर पर धनबाद जिले के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों को नैतिक शिक्षा दर्शन एवं पर्यावरण शिक्षा के समझ एवं जानकारी में सार्थक अंतर नहीं होता है।

तालिका क्रमांक – 3

तुलनात्मक मापनी क्षेत्र	विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान M	प्राथमिक विचलन S.D.	प्राथमिक त्रुटि S.Ed.	क्रांतिक अनुपात C.R	विश्वास स्तर	तालिका से C.R का मान
नैतिक शिक्षा दर्शन	शहरी छात्र	50	26.82	2.10	0.264	9.80	0.05	1.98
पर्यावरण शिक्षा	ग्रामीण छात्र	50	27.74	3.98			0.01	2.63

विश्लेषण एवं व्याख्या – गणना द्वारा प्राप्त ब्न्त्ण का मान 0.08 है। जो 0.05 एवं 0.01 विश्वास स्तर के सारजीयन मान क्रमशः 1.98 एवं 2. 63 है। जो दोनों सार्थकता स्तर के मान से अधिक है। अर्थात् हाई स्कूल स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण छात्रों में नैतिक शिक्षा दर्शन एवं पर्यावरण शिक्षा के प्रति समझ एवं जानकारी में सार्थक अंतर है।

निष्कर्ष –

1. हाई स्कूल स्तर पर शहरी विद्यार्थियों में नैतिक शिक्षा दर्शन एवं पर्यावरण शिक्षा के प्रति समझ एवं जानकारी ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पायी जाती है।

2. हाई स्कूल स्तर पर शहरी छात्रों में नैतिक शिक्षा दर्शन एवं पर्यावरण शिक्षा के प्रति समझ एवं जानकारी ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा अधिक पायी जाती है।

3. हाई स्कूल स्तर पर शहरी छात्राओं में मौलिक अधिकार के प्रति समझ एवं जानकारी ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा अधिक पायी जाती है।

संदर्भ :-

1. सी. डी. शर्मा, भारतीय दर्शन : आलोचन और अनुशीलन, मोतिलाल बनारसीदास, 2004 ;पुनर्मुद्रणद्ध पृ. 22.

2. ‘‘अग्निर्देवता, वातो देवता, सूर्यों देवता ...... वरुणो देवाता’’, चजुर्वेद, 14.20

3. ठतंकलए छलसम ब्ण जीम छंजनतम ंदक च्तवचमतजपमे वf̂वपसे ;8जी म्कपजपवदद्धए छमू क्मसीप ;प्दकपंद्ध रू म्नतमेपं च्नइसपेीपदह भ्वनेम ;च्द्ध स्जकण्ए 1983ण चचण 639ण

4. सी. डी. शर्मा, भारतीय दर्शन : आलोचन और अनुशीलन, मोतिलाल बनारसीदास, 2004 ;पुनर्मुद्रणद्ध पृ. 22.

5. ष्जीम उमजमतपंसपेजपब चीपसवेवचील ाdवूद े जीम स्वांलंजंए जीम बेंतअंां वत ठंतीेंचंजलं पे चतवइंइसल । अमतल वसक `बीववस वf जीवनहीजण ष्क्तण̂ण छण कें्हनचजंए भ्पेजवतल वf प्दकपं चीपसवेवचीलए ज्ञपजंइ डींसए 1969ए च.144ण

6. ̂अपदकमत̂पदही ादक ाण क्नइमलए 1983ए म्दअपतवदउमदजंस उंदंहमउमदजए̂वउम दमू कपउंदेपवदेए पद ज्ण स्ण̂पदही मज ालण ासींइंक ळमवहतंचीपबंस ̂वबपमजलए ळमवहतंचील क्मचंतजउमदजए ासींइंक न्दपअमतेपजलण

7. छांदोग्योपनिषद्, 8.7

8. पृथिव्यप्तेजोवायुरिति तत्त्वानि।

9. प्रत्यक्षमेव प्रमाणः।

10. तत्समुदाये शरीरेन्द्रियविषय संज्ञा।

11. किण्वादिभ्यो मदशक्तिवद् विज्ञानम्।

12. ताम्बुलपूगचूर्णानां योगाद् राग इवोत्थितम्।।

13. भस्मीभूतस्य पुनरागमनं कुतः ?

14. अनन्तधर्मकं ध्रौव्यसंयुक्तं सत्। तत्वार्थसूत्र, 5.29

16. जैन दर्शन अचेतन जड़ तत्त्व को पुद्गल मानता है, जबकि बो(दर्शन में जीव के लिए पुद्गल शब्द का व्यवहार हुआ है।

17. पिपीलिकापुद्गलं प्राप्य पिपीलिका भवति, हस्तिपुद्गलं प्राप्य हस्ति भवति।

18. सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणी मोक्षमार्गः। तत्त्वार्थसूत्र, पृ.- 101

19. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, 2003. पृ. 114

20. विनय पिटक, 1, 1, 7

21. छान्दोग्योपनिषद् 6.4.1

22. कठोपनिषद् 1,3, 10-13

23. श्वेताश्वरोपनिषद् 4-5, 10

24. गीता 2-39, 3.42, 5, 4-5

25. त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि। सांख्यकारिका, 11

26. ठंसकूपदए श्रवीद भ्ण म्दअपतवदउमदजंस च्संदपदह ंदक डंदंहमउमदजण क्मीतंकनद ;प्दकपंद्ध रू प्दजमतदंजपवदंस ठववा क्पेजतपइनजवतेण 1988ण चचण 317ण

27. जगत् के चेतन-अचेतन जितने भी दृश्य पदार्थ हैं, वे सब संघात रूप हैं। इन अलग अलग पदार्थों को व्यक्ति कहा जाता हे, ये विशेष नहीं है। यहाँ विशेष्ज्ञ नामक पदार्थ विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

28. सी. डी. शर्मा, भारतीय दर्न :आलोचन और अनुशीलन, मोतीलाल, बनारसीदास 2004ण पृ. 164

29. क्रियागुवत् समवायिकारण द्रव्यम्! । वैशेषिकसूत्र, 1.1.15

30. न कदाचिदनीटृटशं जगत।

31. अथातो धर्मजिज्ञासा। मीमांसासूत्र.1.1.1

32. चोदनालक्षणोऽर्थो धर्म, वही, 1.1.2

33. अभ्नायस्य क्रियार्थत्वादानर्थक्यमतदर्थानाम्। वही, 1.2.1

34. स्वर्गकामोजयेत।

35. ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः।

36. कद्ध सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म। तैत्तिरियोपनिषद् 2.1

ख. विज्ञानमानन्दं ब्रह्म। वृहदारण्यक-उपनिषद्, 3.9.28

37. जन्माद्यस्य यतः । ब्रह्मसूत्र, 1.1.2

38. यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, यत् प्रयन्त्यभिसंविशन्ति 33 तद् ब्रह्म। तैत्तिरीय उपनिषद्, 3.1

39. सर्वखलु इदं ब्रह्म।

40. सी. डी. शर्मा, भारतीय दर्शन आलोचन और अनुशीलन, मोतीलाल बनारसीदास, 2002, पृ. 292

41. सर्व परमपुरूषेण सर्वात्मना स्वार्थे नियाम्यं धार्य तच्छेक्तैकस्वरूपम् इतिसर्व चेतनाचेतनं तस्य शरीरम्। श्रीभाष्य, 2.1.9.

42. चिद्चिद्विशिष्ट ईश्वरः।

43. यस्य सर्वाणि भूतानि शरीर, यः सर्वाणि भूतानि अन्तरो यमयति एष ते आत्मा अन्तर्यामी अमृतः। बृहदारण्यक उप. 3.7.15

44. A Student's Environment Do-it-yourself Manual. C.P.R. Environmental Education Centre Madras (India) : 1996 pp. 42.

45. Agarwal, K. C. Environmental Biology. Bikaner (India) : Agrobotanical Publishers, 1987. pp. 439.

46. Astanin, L. P. and K. N. Blagosklonov. Conservation of Nature, Moscow : Progress Publishers, 1983, pp. 148.

47. Attiga, Ali Ahmed. Interdependence on the Oil Bridge : Risks & Opportunities. Petroleum Information Committee of the Arab Self States, 1988. pp. 173.

48. Bskshi, A. K. Energy. New Delhi (India) : National Book Trust, india, 1995. pp. 89.

49. Bandopadhya, J et al., ed. India's Environment : Crisis and Responses. Dehradun (India) : Natraj Publishers, Rajpur Road, 1985. pp. 309.

50. Baldurin, John H. Environmental Planning and Management, Dehradun (India) : International Book Distributors, 9/3 Rajpur Road (First Floor), 1988. pp. 336.

60. Best, John W Research in Education. New Delhi (India) : Prentice Hall of India Pvt. Ltd. (Fourth Edition), 1983. pp. 431.

61. Jaus, H. 1982. “The effect of environmental education instruction on children’s attitudes in elementary school students”, Science Education 66:5, pp. 690–692.

62. Jinarajan, S. 1999. A study of Environmental Awareness and Attitude towards Environmental Education of Student Teachers of Bangalore City.M.Phil. Dissertation, Department of Education, Bangalore University.

·63. Sanera, M. 1998. “Environmental education: Promise and performance”, Canadian Journal of Environmental Education 3:3, pp. 9–26.

64. Sengupta, M., Das, J. And Maji, P. K. 2010. Environmental Awareness and Environment Related Behaviour of Twelfth Grade Students in Kolkata: Effects of Stream and Gender., Anwesa, Vol. 5 : 1 - 8 (January 2010).